10

बौद्ध स्थापत्यः स्तूप, चैत्य तथा विहार

रीतिका गर्ग *

जिन महापुरुषों का भारत की संस्कृति एवं विचारधारा पर गहरा प्रभाव पड़ा उनमें बुद्ध का स्थान अग्रणी है। बौद्ध कला के आरम्भिक काल में चित्रकला का उतना प्रभाव नहीं था जितना स्थापत्य कला और शिल्प का था। अतः बौद्ध धर्म की उपासना एवं उसके प्रचार के लिए स्तूपों तथा चैत्यों व बौद्ध भिक्षुओं के निवास के लिए विहारों का निर्माण किया गया। पहाड़ों की गुफाओं को तथागत बुद्ध को समर्पित करते हुए इन्हें बौद्ध तीर्थ-स्थानों का रूप प्रदान किया गया। मैदानी इलाकों में भी ईंट-पत्थरों आदि के द्वारा बौद्ध पूजा-उपासना के स्थल निर्मित किए गए। बौद्ध धर्म के स्तूप इस धर्म की विराट कल्पना पर आधारित थे। इनके गोल गुम्बद आकाश की परिछाया, शिखर की मुक्ति का सन्देश, सम्पूर्ण गुम्बद विराट भावना का लाक्षणिक प्रतिरूप था। चैत्य वे स्मारक थे जिनमें महापुरुषों की अस्थियाँ, दाँत, राख या केश गाड़कर रखे जाते थे तथा विहार बौद्ध भिक्षुओं के निवास के लिए निर्मित किए गए। इस शोध पत्र में बौद्ध धर्म की उपासना एवं उसके प्रचार के लिए बौद्ध स्थापत्य के स्तूपों, चैत्यों तथा विहारों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

[**प्रमुख शब्द :** संस्कृति, विचारधारा, स्थापत्य, शिल्प, गुम्बद।]

1. परिचय

जिन महापुरूषों का भारत की संस्कृति और विचारधारा पर गहरा प्रभाव पड़ा उनमें बुद्ध का स्थान अग्रणी है। आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व बुद्ध अवतरित हुए। इस लम्बी अवधि में संसार ने न जाने कितनी करवटें लीं, कितना कुछ घटित हुआ किन्तु कोई भी आँधी बुद्ध के द्वारा प्रकाशित ज्योति को बुझा नहीं पाई। बौद्ध कला के आरम्भिक काल में चित्रकला का उतना प्रभाव नहीं था

* **सहायक आचार्य, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)।**

जितना स्थापत्य कला एवं शिल्प का था। अतः बौद्ध धर्म की उपासना एवं उसके प्रचार के लिए स्तूपों तथा चैत्यों व बौद्ध भिक्षुओं के निवास के लिए विहारों का निर्माण किया गया। पहाड़ों की गुफाओं को तथागत बुद्ध को समर्पित करते हुए इन्हें बौद्ध तीर्थ-स्थानों का रूप प्रदान किया गया। मैदानी इलाकों में भी ईंट-पत्थरों आदि के द्वारा बौद्ध पूजा-उपासना के स्थल निर्मित किए गए।

भारतीय कलाकार सदैव से ही प्राचीन भारतीय कला व संस्कृति से प्रभावित होता हुआ कला-सृजन करता आया है। उदाहरण के लिए, तथागत बुद्ध के दया व शान्ति के उपदेश को प्रचारित करने में कला ने अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया। बुद्ध के अहिंसा व परोपकार के मार्ग को विश्व-भर के देशों में अपनाने का प्रयास किया गया। यद्यपि भारतीय कलाकारों ने अपने देश की गौरवशाली मिट्टी से ही बुद्ध के स्वरूप का सर्वप्रथम निर्माण किया, लेकिन मानवता की पुकार को सुनकर सम्पूर्ण विश्व को शान्ति के प्रकाश से अलौकित करने का बीड़ा उसने उठाया और इस प्रकार विश्व में बुद्ध के शान्ति व अहिंसा के उपदेश का प्रचार-प्रसार हुआ। सदियों से प्रसारित इस परम्परा को वर्तमान समय में भी भारतीय कलाकार अपनाते आये हैं और इस प्रकार बुद्ध का सौम्य रूप शान्ति का प्रतीक बनकर भारतीय कला व संस्कृति का एक अभिन्न अंग बन गया है। भारत वर्ष बौद्ध धर्म की जन्मभूमि है, अतः इसे बौद्ध कला की जन्मभूमि भी कहा जा सकता है।

बौद्ध काल में महात्मा बुद्ध की बड़ी-बड़ी विशाल एवं भव्य मूर्तियों का निर्माण हुआ, परन्तु ये मूर्तियाँ एक-दूसरे से भिन्न हैं। बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए संघारामों एवं चैत्यों का निर्माण किया गया। पहाड़ों की गुफाओं को साधना स्थल बनाकर उन्हें इस धर्म के अनुरूप चित्रों से सुसज्जित किया गया। बौद्ध धर्म के स्तूप इस धर्म की विराट कल्पना पर आधारित थे। इनके गोल गुम्बद आकाश की परिछाया, शिखर की मुक्ति का सन्देश, सम्पूर्ण गुम्बद विराट भावना का लाक्षणिक प्रतिरूप था। ये बौद्ध स्तूप समाधिस्थ साधक की प्रतिकृति थे। देवतावाद के अनुरूप बुद्ध के अनेक पूर्व जन्मों के अवतारों की कल्पना की गई। इस प्रकार, जातक कथाओं की रचना एवं उनका जन्म हुआ।[1] स्तूप की रचना, उसकी प्रतीकात्मकता एवं धार्मिक महत्त्व को जानने के लिए 'महापरिनिब्बान सुत्त' एवं 'महावंस' बहुत उपयोगी है। भारतीय कला के विकास में बौद्ध धर्म का व्यापक योगदान है। जैन साहित्य की भाँति ही बौद्ध ग्रन्थों में भी कला के प्रचुर उल्लेख मिलते हैं। पालि त्रिपिटक एवं जातक साहित्य से ज्ञात होता है कि उस काल के मनोरंजन के श्रेष्ठ साधनों में चित्रकला की गणना भी की जाती थी।[2]

इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि बौद्ध स्थापत्य में स्तूप बुद्ध के अवशेषों को रखने वाला टीला है, चैत्य एक प्रार्थना कक्ष है जिसमें स्तूप होता है तथा विहार भिक्षुओं के रहने एवं शिक्षा लेने का स्थान है। स्तूप मुख्य रूप से अवशेषों के संरक्षण एवं पूजा के लिए होते हैं, जबकि चैत्य पूजा-पाठ एवं सभाओं के लिए हैं। विहार भिक्षुओं के निवास एवं शिक्षा के लिए बने मठ हैं। इस शोध पत्र में इन तीनों को संक्षेप में समझाने की कोशिश की गई है।

2. बौद्ध स्थापत्य में स्तूप

स्तूप का प्रेरणा स्रोत बुद्ध पूर्व काल में निहित है। बौद्ध कला के अन्तर्गत स्तूप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। स्तूप एक ठोस वास्तु संरचना है। स्तूप को पालि भाषा में थूप या थूभ

कहा जाता है। जातकों में थूप या थूपिका शब्द का प्रयोग किसी ऊँचे टीले या स्मारक के लिए किया गया है। बौद्ध निकाय ग्रन्थों में थूप शब्द का प्रायः प्रयोग हुआ है। थूप का अर्थ है ढेर, इकठ्ठा करना, ढेर लगाना। सम्भवतः मिट्टी के ढेर या टीले के लिए स्तूप, शब्द का प्रयोग किया जाने लगा।[3] कालान्तर में मिट्टी के इन ढेरों का स्थान ईटों एवं पत्थरों द्वारा निर्मित स्तूपों ने ले लिया। स्तूप मृतक के अवशेषों पर बनाया जाने वाला एक स्मारक है। कला के क्षेत्र में पाषाण का प्रयोग सर्वप्रथम शायद मौर्य सम्राट अशोक ने ही किया था। उसने 84 हजार स्तूपों का निर्माण करवाया। स्तूप के आठ अंग माने गए हैं—1. वेदिका, 2. तोरण, 3. प्रदक्षिणापथ, 4. मेधि, 5. अण्ड, 6. हर्मिका, 7. छत्र तथा, 8. सोपान। उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

1. **वेदिका (रेलिंग)**—स्तूप के चारों ओर जिस रेलिंग का निर्माण करके उस स्थान को चारों ओर से घेरा जाता था, उसे वेदिका, रेलिंग या घेरा कहा गया। यह प्रतीकात्मक एवं प्रकार्यात्मक दोनों तरह के काम करता है। बनावट के हिसाब से, यह पत्थर या लकड़ी का बना होता है तथा इसमें अक्सर सीधे खम्भे (स्तम्भ) होते हैं जो हॉरिजॉन्टल क्रॉसबार से जुड़े होते हैं, जो पहले की लकड़ी की रेलिंग के डिजाइन जैसा दिखता है। वेदिका स्तूप के पवित्र क्षेत्र को बाहरी, दुनियावी दुनिया से अलग करती है, जबकि भक्तों को स्मारक के चारों ओर श्रद्धापूर्वक परिक्रमा ('प्रदक्षिणा') करने की अनुमति देती है। कलात्मक रूप से, यह बुद्ध के जीवन के दृश्यों, जातक कथाओं, फूलों के डिजाइन एवं शुभ प्रतीकों वाली नक्काशी से भरपूर सजाया जाता है। प्रतीकात्मक रूप से, वेदिका एक सुरक्षात्मक सीमा का प्रतिनिधित्व करती है जो स्तूप के अन्दर रखी पवित्र अवशेषों की पवित्रता की रक्षा करती है तथा भक्तों को ज्ञान की ओर उनकी आध्यात्मिक यात्रा में मार्गदर्शन करती है।
2. **तोरण (प्रवेशद्वार)**—स्तूप तक पहुँचने के लिए वेदिका में चारों दिशाओं में एक-एक प्रवेशद्वार बनाया जाता था, जिस पर मेहराबदार तोरण खड़े किए जाते थे। इस प्रकार, यह स्तूप के चारों ओर चार मुख्य दिशाओं में बने हुए नक्काशीदार तोरण हैं। तोरण पवित्र जगह में जाने के लिए औपचारिक प्रवेशद्वार का काम करते हैं तथा आमतौर पर इन पर बुद्ध के जीवन एवं जातक कथाओं के दृश्य बने होते हैं। ये तोरण भौतिक दुनिया से आध्यात्मिक दुनिया में जाने के प्रतीक हैं।
3. **प्रदक्षिणा पथ (परिक्रमा का रास्ता)**—तोरण द्वार से प्रवेश करने के पश्चात स्तूप एवं वेदिका के मध्य निर्मित परिक्रमा स्थान को प्रदक्षिणा पथ कहते थे। यह भक्तों के लिए पूजा एवं ध्यान करते हुए घड़ी की दिशा में इसके चारों ओर घूमने के लिए होता है। परिक्रमा का यह अनुष्ठान जीवन चक्र एवं बुद्ध की शिक्षाओं के प्रति सम्मान का प्रतीक है, जो सचेतन (माइण्डफुलनेस) एवं भक्ति पर जोर देता है।
4. **मेधि (गोल चबूतरा)**—उस गोल चबूतरे या प्लेटफॉर्म को मेधि कहा जाता था जिस पर स्तूप का मुख्य अंग रहता था। यह अर्द्ध-वृत्ताकार या बेलनाकार संरचना को सहारा देता है। यह स्तूप को एक ऊँचा बेस देता है तथा इसमें अक्सर परिक्रमा पथ तक जाने वाली सीढ़ियाँ होती हैं। वास्तुकला के अनुसार, यह धरती के उस हिस्से को दिखाता है जो ज्ञान की ओर आध्यात्मिक चढ़ाई की गति को बढ़ाता है।

5. **अण्ड (गुम्बद)**—उल्टे या औंधे कटोरेनुमा या आधा गोलाकार गुम्बद स्तूप का ठोस भाग अण्ड कहा जाता था। यह स्तूप की कोख की उस संरचना को भी दिखाता है, जो जन्म, पुनर्जन्म एवं बुद्ध के अवशेषों को घेरे हुए ब्रह्माण्ड का प्रतीक है। यह ही मुख्य एवं सबसे खास हिस्सा होता था तथा ठोस होने के कारण इसके भीतर जाना सम्भव नहीं था। यह ब्रह्माण्डीय पर्वत (मेरु) का प्रतीक है और बुद्ध के अवशेषों को ढकने के लिए इस्तेमाल की गई मिट्टी के टीले को दिखाता है, जो ब्रह्माण्ड एवं ज्ञान से भरे मन को दर्शाता है। इसके अन्दर अक्सर अवशेष या पवित्र वस्तुएँ रखी जाती हैं, जिससे अण्ड स्मारक का आध्यात्मिक केन्द्र बन जाता है। इसका चिकना आकार शान्ति एवं पूर्णता को दिखाता है, जो बुद्ध के ज्ञान की पूर्णता को दर्शाता है।

6. **हर्मिका (चौकोर रेलिंग)**—अण्ड के ऊपरी भाग में प्रायः अस्थि-पेटिका को गाड़ा जाता था जिसके चारों ओर चौकोर वेदिका से उस स्थान को घेर दिया जाता था, उसे हर्मिका कहा गया। दूसरे शब्दों में, हर्मिका गुम्बद के ऊपर रखा एक छोटा चौकोर प्लेटफॉर्म या रेलिंग होती है। यह देवताओं के रहने की जगह को दिखाती है और स्वर्ग और पृथ्वी के बीच की धुरी को चिह्नित करती है। हर्मिका अक्सर छत्र (छाता) के बेस को घेरे रहती है और इच्छाओं की दुनिया के ऊपर आध्यात्मिक दुनिया का प्रतीक है।

7. **छत्र (छाता या पैरासोल)**—अस्थि-पटल के ऊपर पत्थर की एक यष्टि खड़ी की जाती थी, जिसके शीर्ष पर एक अथवा तीन छत्र रखे जाते थे। इनको मालाओं एवं पताकाओं से सुसज्जित किया जाता था। यह हर्मिका से ऊपर उठने वाला एक तिहरा छाता जैसा ढाँचा है, जो ऊँचे पद, सुरक्षा एवं बुद्ध की आध्यात्मिक सम्प्रभुता का प्रतीक है। इसके तीन स्तर तीन रत्नों को दिखाते हैं—बुद्ध, धर्म (शिक्षाएँ) तथा संघ (समुदाय)—जो स्तूप के शीर्ष की ओर प्रतीकात्मक उत्थान का प्रतीक हैं।

8. **सोपान (सीढ़ी)**—सोपान का मतलब सीढ़ी या स्टेप्स हैं जो मेधी या प्रदक्षिणा पथ तक ले जाते हैं। स्तूप में निर्मित मेधि प्रायः ऊँची हुआ करती थी, जिस पर चढ़ने-उतरने के लिए सीढ़िया निर्मित की जाती थीं जिसे सोपान कहते थे। सोपान भक्तों को रस्म के तौर पर परिक्रमा करने के लिए ऊपर चढ़ने में सहायता करता है तथा आध्यात्मिक यात्रा को ऊपर की ओर बढ़ने, दुनियावी दुनिया से ऊपर उठकर उच्च चेतना एवं ज्ञान की ओर बढ़ने को दिखाता है।

स्तूप के प्रकार भी चार माने गए हैं—1. शारीरिक, 2. पारिभौगिक, 3. उद्देशिक तथा 4. संकल्पित। शारीरिक स्तूप में बुद्ध अथवा उनके प्रमुख शिष्य की अस्थियाँ अथवा उनके शरीर के अवयव जैसे—नख, केश, दाँत आदि को रखा जाता था। पारिभौगिक वे स्तूप हैं जिनमें बुद्ध के द्वारा प्रयोग की जाने वाली वस्तुऐं, जैसे—आसान, पादुकाऐं, छड़ी आदि रखी जाती थीं। उद्देशिक स्तूपों का निर्माण प्रायः उस स्थान पर किया गया जहाँ बौद्ध धर्म के आख्यान हुए, जो स्थान बुद्ध की उपस्थिति से पवित्र हुए अथवा बुद्ध के जीवन की कोई घटना घटित हुई थी। संकल्पित स्तूप को अंग्रेजी में 'वोटिव स्तूप' भी कहा जाता है। ये वे स्तूप हैं जिन्हें बौद्ध अनुयायी

बौद्ध तीर्थों पर ले जाकर स्थापित कर देते हैं। स्तूप की कल्पना ब्रह्माण्ड की अभिव्यक्ति करने वाले स्वस्तिक के रूप में की गई है। स्तूप के गोलार्द्ध को अन्तरिक्ष के समान, हर्मिका को देवलोक सदृश्य मानते हुए बुद्ध का निवास स्थान माना गया। भारत में सारनाथ, साँची व अमरावती में स्थित स्तूप विशेष प्रसिद्ध है।

ऐसे स्तूप अनेकों जगह पाए जाते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख स्थान प्राचीन लिच्छवीगण की राजधानी वैशाली, भारहूत और साँची (मध्य प्रदेश), पौनी (महाराष्ट्र), अमरावती तथा नागार्जुनकोण्डा (आन्ध्र प्रदेश), सारनाथ (उत्तर प्रदेश) तथा नालन्दा (बिहार) है। साँची के स्तूप इस वास्तुकला का आदर्श नमूना है। इसमें स्तूपकला की सभी विशेषताएँ पाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त इसमें बहुत ही सुन्दर तराशे हुए चार द्वार हैं जिन पर सुन्दर मूर्तियाँ निर्मित हैं। स्तूपों के निर्माण की कला में प्रादेशिक भिन्नताएँ भी हैं जैसे आन्ध्र प्रदेश के स्तूप वृत्ताकार हैं। पाकिस्तान और अफगानिस्तान में भी स्तूपों के अवशेष मिले हैं जिनकी आधारशिला गचकारी द्वारा अलंकृत है। स्तूपों का अन्तिम नमूना रतनागिर में है जो नवीं शताब्दी में बना था। ऐसा लगता है कि स्तूपों का निर्माण दो कारणों से बन्द कर दिया गया। एक तो बौद्ध धर्म ही धीरे-धीरे भारत भूमि से लुप्त होता रहा और दूसरे बुद्ध प्रतिमाओं ने स्तूपों की उपयोगिता को ही निरर्थक बना दिया।

3. बौद्ध स्थापत्य में चैत्य

चैत्य बौद्ध भवनों का दूसरा प्रमुख रूप है। इनका प्रयोग सामूहिक उपासना के लिए अथवा धर्म चर्चा के लिए किया जाता था। चैत्य शब्द संस्कृत भाषा के शब्द 'चिता' से बना है जिसकी मूल धातु 'ची' है, जिसका अर्थ है चुनना, चयन करना, एक के ऊपर एक रखना आदि। इस शब्द का सम्बन्ध मूलतः चिता या चिता से सम्बन्धित वस्तुओं से है।[4] चिता के अवशिष्ट अंशों का चयन करके उन्हें भूमि गर्भ में रखकर उनके ऊपर जो स्मारक बनाए गए, प्रारम्भ में उन्हीं को चैत्य कहा गया था। चैत्य वे स्मारक थे जिनमें महापुरूषों की अस्थियाँ, दाँत, राख या केश गाड़कर रखे जाते थे। ये चैत्य वस्तुतः पूजा के स्थान होते थे तथा इन्हीं से आगे चलकर मन्दिर-वास्तुकला का विकास हुआ। बौद्धकाल में स्तूप इसी प्रकार के चैत्य थे। परन्तु स्तूप निर्माण की परम्परा बुद्ध से पहले भी प्रचलित थी। स्तूप तथा चैत्य परम्परा के उल्लेख ऋग्वेद, अथर्ववेद, शतपथब्राह्मण तथा सूत्र साहित्य में उपलब्ध हैं।[5] अपने प्रारम्भिक स्वरूप में चैत्य काष्ठ निर्मित हुआ करते थे जिनका उल्लेख रामायण तथा बौद्ध एवं जैन साहित्य में समान रूप से हुआ है।[6]

प्रारम्भ में प्रायः स्तूप अथवा चैत्य खुले आकाश के नीचे हुआ करते थे। कालान्तर में इन्हें स्थायी रूप देने की भावना ने तथा वर्षा, आँधी व धूप आदि से स्तूप एवं भक्तों की रक्षा हेतु इन चैत्यों को आच्छादित भवन में स्थापित करने के प्रयास किए गए। पर्वतों की चट्टानों को तराशकर उनमें नवीन कला का संसार रचा गया। उनके भीतर बड़े-बड़े मण्डप, स्तम्भ, स्तूप आदि बनाए जाने लगे। इनको चैत्यगृह, शैलगृह, शैलमण्डप कहा गया। मैदानों में भी चैत्यगृह को ईंटों-पत्थरों से बनाने की परम्परा भी प्रारम्भ हुई। इन चैत्यों को तल-योजना आगे से आयताकार

और पीछे की ओर अर्द्धवृत्ताकार रहती थी क्योंकि इनमें पीछे की ओर स्तूप स्थित रहता था। स्तूप के सामने बड़ा सभा-मण्डप तथा उसके अगल-बगल परिक्रमा के लिए बरामदे होते थे। बरामदों एवं सभा-मण्डप को पृथक-पृथक करने के लिए चैत्यगृह में दोनों ओर स्तम्भों की पंक्तियाँ रहती थी। प्रवेशद्वार एकदम सामने बनाया जाता था जिसके ऊपर घोड़े की नाल के आकार की चाप या मेहराब बनाते थे। प्रवेशद्वार को उत्कीर्ण करके अंलकृत भी किया जाता था। कई चैत्य गुफाओं की छतों में लकड़ी की शहतीर के रूप में धारियाँ भी पाई गई हैं। इस प्रकार के उदाहरण अजन्ता, ऐलोरा, पाण्डुलेण आदि की गुफाओं में देखे जा सकते हैं। इस प्रकार, आज भारत में जो चैत्य-गृह मिले हैं उनमें से अधिकांश बौद्ध धर्म से ही सम्बन्धित हैं और ये बौद्धों के पूजा-स्थल हैं। पूजा-स्थल होने के कारण ही इन चैत्यों में स्तूप का होना आवश्यक था।

कुषाण और गुप्त कालों में इनके निर्माण को प्रेरणा मिली। लगभग 150 ई0 पू0 में कार्ले (बम्बई के पास) का चैत्य भारत का विशालतम गुहा मन्दिर है। इसकी लम्बाई लगभग 38 मीटर, चौड़ाई 14 मीटर से अधिक और ऊँचाई 14 मीटर के लगभग है। यह वास्तुकला का शानदार उदाहरण है। इसके मुख्य कक्ष में स्तम्भों की दो पंक्तियाँ, एक स्तूप और पत्थर की विविध मूर्तियाँ हैं। भगवान बुद्ध के अतिरिक्त चैत्य को दान देने वालों की भी मूर्तियाँ हैं। इसके मोहरे पर भी कई उभरी हुई आकृतियाँ खुदी हैं। इस कक्ष में प्रकाश के लिए लकड़ी की जाली युक्त विशेष झरोखे हैं। यह सारा-का-सारा चैत्य चट्टान समूहों को काटकर बनाया गया है और आज भी अपनी भव्यता से दर्शकों का मन हर लेता है।

चैत्यों की वास्तुकला में शिल्पकारों की और मूर्तिकारों की कल्पना और कौशल दिखाई देता है। इन चट्टानों के उत्खनन का कार्य ऊपर से नीचे की ओर चलता था। एक ही साथ प्रारम्भिक कटाई की जाती थी, आकृति और प्रतिमाओं का निर्माण किया जाता था और दीवारों व छतों पर चमकती पालिश की जाती थी। स्पष्ट है कि चैत्य का निर्माण अनेकों कलाकारों और शिल्पकारों के सहकार्य का परिणाम था। चैत्य गृहों पर मिले अभिलेखों से पता चलता है कि समृद्धजन इनके निर्माण में दान देते थे। यह आवश्यक नहीं था कि दानी लोग स्थानीय ही हों। जब पर्याप्त धन हो जाता था तो निर्माण कार्य प्रारम्भ होता था। बौद्ध भिक्षु स्वयं इस कार्य का निर्देशन और निरीक्षण करते थे। वे स्वयं भी दक्ष शिल्पकार थे।

4. बौद्ध स्थापत्य में विहार

विहार एक संस्कृत शब्द है जो वैदिक ग्रन्थों में कई अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। सामान्य रूप से इसे 'वितरण, स्थानान्तरण, पृथक्करण, व्यवस्था' आदि के रूप में माना गया है।[7] संस्कृत एवं पालि में आमोद-प्रमोद के लिए विकसित किसी भी स्थान को विहार कहा जाता है। कालान्तर में बौद्ध भिक्षुओं के निवास के लिए बनाए जाने वाले कक्षों को विहार कहा जाने लगा। विहारों में स्तूप नहीं होते थे। बाद में विहारों में भी प्रवेशद्वार के ठीक सामने के कक्ष में पूजा-गृह की व्यवस्था की जाने लगी। निर्माण शैली की दृष्टि से विहार चैत्यों से एकदम भिन्न होते थे। विहार में एक प्रवेशद्वार और उसके सामने स्तम्भों पर आधारित बरामदा बनाया जाता था। विहारों के मध्य में एक बड़ा सा मण्डप या आँगन बनाया जाता था जिसके तीन ओर भिक्षुओं के निवास के

लिए छोटे-छोटे कक्ष या कोठरियाँ खोदी जाती थीं। प्रायः यह विहार योजना चौकोर होती थी। एक भिक्षु के लिए एक कक्ष होता था, बड़े कक्षों में दो या तीन भिक्षुओं के निवास की व्यवस्था होती थी। बहुत अधिक भिक्षुओं के निवास के लिए बने विहार को संघाराम कहा जाता था।

ऐसा माना जाता है कि प्रारम्भ में विहार भी काष्ट निर्मित ही होते थे किन्तु वे अब नष्ट हो चुके हैं तथा अब विहारों के शैलकृत रूप के अवशेष ही बचे हैं। इन विहारों में चट्टानों को काटकर ही भिक्षुओं के शयन के लिए चौकियाँ बनाई गई हैं। इनके उदाहरण हमें नालन्दा, अजन्ता, ऐलोरा तथा पाण्डुलेण आदि की गुफाओं में दिखाई देते हैं। इन विहारों को अलंकृत करने की परम्परा भी रही जिसके दर्शन विभिन्न स्थानों के विहारों में होते हैं। सबसे प्रारम्भिक बौद्ध मठ कौशाम्बी में मिला है जो ई0 पू0 पाँचवीं सदी में निर्मित किया गया था।

5. निष्कर्ष

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि भारतीय बौद्ध स्थापत्य में स्तूपों, चैत्यों तथा विहारों के निर्माण की एक दीर्घकालिक परम्परा रही है जो न केवल कलात्मक दृष्टि से अपितु सांस्कृतिक व ऐतिहासिक दृष्टि से भी अद्‌भुत तथा विलक्षण है। वास्तव में, बौद्ध स्तूप, चैत्य एवं विहार अन्य धर्मों और सम्प्रदायों के लिए अपने-अपने देवताओं के लिए मन्दिर निर्माण करने के प्रेरणा स्रोत बन गए। वर्तमान समय में हमें अपनी इस बहुमूल्य धरोहर के महत्त्व को समझने के साथ ही इसके संरक्षण व विशद अध्ययन की भी आवश्यकता है ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ अपने देश के इस कलात्मक गौरव को देखने से वंचित ना रह जाए।

सन्दर्भ-सूची

1. भार्गव, डॉ0 सरोज, **सौन्दर्य बोध एवं ललित कलायें**, कला प्रकाशन, वाराणसी, 1999, पृ0सं0 101.
2. जोशी, महेश चन्द्र, **युग-युगीन भारतीय कला**, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2018, पृ0सं0 78.
3. जोशी, महेश चन्द्र, वही, पृ0सं0 108.
4. https://en.m.wikipedia.org/wiki/chaitya
5. श्रीवास्तव, ए.एल., भारतीय कला, किताब महल, इलाहाबाद, 2004, पृ0सं0 62.
6. https://en.m.wikipedia.org/wiki/chaityab
7. https://en.m.wikipedia.org/wiki/vih%c4%81ra ★

https://doi.org/10.62047/JNDH.2025.10.31.85